Collection of Mantras

Brought to you by:

॥ श्री महागणपतये नमः ॥

Indian Astrology Source

|| श्री महागणपतये नमः ||

Indian Astrology Source

PREFACE

I do not have any inclination or inspiration to make the whole of world religious. Hinduism is a vast tree that nobody can befall the age-old tree. It has survived onslaughts from Buddhism, Jainism, Islam and Christianity. I am not referring to physical conversion of Hindu population. Brahmins in Vedic age stopped animal sacrifice and the founder of Buddhism, Gowtama Buddha is regarded as an incarnation of Mahavishnu! Hindus do not hate Jains who worship the same Gods. They attend Urs of Muslim Saints. They watch the Christian movie Karunaamayi, (story of Jesus Christ) and shed tears. A true Hindu cannot hate any religious faith, for he finds all these within his own religious fold, he has been exposed to the thoughts of other faiths since his birth! Hinduism is not a tender tree that needs anybody's protection. It is for us to derive benefits from the vast tree. Even if I want to add a new thought, it is not possible, as the same has already been explored elsewhere! I do not believe in" spreading the Gospel to one and all".

I know several highly placed officers who make their staff write religious, astrological and management topics for them while they are busy making black money in various ways. There is a saying in Kannada, "Mantra helalikke, badanekaayi tinnalikke" [Mantras are for telling others and brinjals for my eating]. One need not be religious to talk religion! I am not an IAS or IFS who use their subordinates to release "cut and paste" books instantly. What you see here is, my hard work. Obviously this is what I am doing here! Once I wanted to gift a small book containing certain mantras to my close friend. It would cost perhaps Rs.20 or less. But, I searched for that in all book stalls, temples and such places. Letters to the publisher did not produce any result. Later on, I came to know, he had stopped publication of such books, as the market is not encouraging! Some of my enlightened readers ask me to provide them certain mantras, not readily available in the market. In India, we speak many languages. Many people prefer to read mantras in their respective mother tongues. I believe, I would be of some help in their spiritual progress. Hence, this publication. Books marks are provided for easy navigation. For offline use you can also save the document on your local machine. Unless it is very essential, please do not take paper prints - "Vriksho rakashati rakshitaha" [Trees protect those, who protect them].

Taittariya Samhita in Shikshavallisays, "Swadhyayane cha na pravaditavyam, pravachane cha aparvaditavyam" (Do not give up self-study and teaching others). A Brahmin (learned man) who does teach others, becomes brahmaraakshasa (a demon) after his death, it is said. No, I do not wish to become a brahmaraakshasa! I am merely giving directions to a traveler like a policeman - nothing more, nothing less.

The collection is based on the request of my learned readers. In case any mantras, stotra or slokas are required to be included, do let me know at astrovidya.com at gmail.com (replace 'at' by '@")

CONTENTS:

श्री गणेश स्तोत्र [Sri Ganesha stotra]

शुक्लाँबरधरँ विष्णुँ शशिवर्णं चतुर्भुजँ।
प्रसन्नवदनँ ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशांतये।।

श्री महालक्ष्मी स्तोत्र [Sri Mahalakshmi stotra]

लक्ष्मींक्षीरसमुद्रराजतनयाँ श्रीरँगधामेश्वरीं।
दासीभूत समस्त देव वनिताँ लोकैक दीपाँकुराँ।।
श्री मन्मंद कटाक्षलब्ध विभव ब्रह्मेंद्र गँगाधरां।
त्वाँ त्रैलोक्यस कुटुँबिनीं सरसिजाँ वँदे मुकुँदप्रियाँ।।

श्री सरस्वती स्तोत्र [Sri Saraswathi stotra]

या कुँदेंदु तुषार हारधवळा या शुभ्र वस्त्रान्विता।
या वीणा वरदँड मँडितकरा या श्वेत पद्मासना।।
या ब्रह्माच्युत शँकर प्रभृतिभिः देवैस्सदा पूजिता।
सा माँ पातु सरस्वती भगवती निश्श्येषजाड्यापहा।।

निवेदना स्तोत्र [Nivedana stotra]

त्वमेव माता च पिता त्वमेव।
त्वमेव बँधुश्च सखा त्वमेव।।
त्वमेव विद्या द्रविणँ त्वमेव।
त्वमेव सर्वं मम देवदेव।।

नवग्रह स्मरणॆ [Navagraha Smarane]

नमः सूर्याय चँद्राय मँगळाय बुधाय च।
गुरु शुक्र शनिभ्यश्च राहवे केतवे नमः।।

प्रार्थनॆ [Prarthane]

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयँताँ न्यायेन मार्गेण महीं महीशाः।
गो ब्राह्मणेभ्याः शुभमस्तु नित्यँ लोकाः समस्ताः सुखिनो भवँतु।।

शिवस्तुति [Shivastuti]

वँदे शँभुमुमापतिं सुरगुरुँ वँदे जगत्कारणँ।
वँदे पन्नगभूषणँ मृगधरँ वँदे पशूनाँपतिं।।
वँदे सूर्यशशाँद वह्निनयनँ वँदे मुकुँदप्रियाँ।
वँदे भक्तजनाश्रयँ द वरदँ वँदे शिवँ शँकरँ।।

गौरी जप [Gowri Japa]

ओं नमः शिवकाँतायै ह्रीं नमः शिवशक्त्यै।
ओं नमो जगताँ वँदे ममभूयान्मनोरथः।।

इँद्राक्षी स्तोत्र [Indrakshi stotra]

इँद्राक्षीं द्विभुजा देवीं वँदे पीतवस्त्रद्वयान्विताँ।
वामहस्ते वज्रधराँ दक्षिणेन वरप्रदाँ।।
इँद्राक्षीं युवतीं देवीं नानालँकार भूषिताम्।
प्रसन्नवदनाँभोजामप्सरोगण सेविताँ।।

बिल्वस्तुति [Bilwa stuti]

त्रिदळँ त्रिगुणाकारँ त्रिनेत्रँ च त्रियायुधँ।
त्रिजन्म पापसँहारँ एकबिल्वँ शिवार्पणँ।।

अन्नपूर्णेश्वरी स्तोत्र [Annapurneshwari stotra]

नित्यानँदकरी वराभयकरी सौंदर्यरत्नाकरी।
निर्धूताखिल घोरपावनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी।।
प्रालेयाचलवँश पावनकरी काशीपुराधीश्वरी।
भिक्षाँदेहि कृपावलँबनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी।।

चँद्र अष्टाविंशतिनाम स्तोत्र [Chandra astaavimshati naama stotra]

अस्य श्री चँद्रस्याष्टाविंशतिनाम स्तोत्रस्य गौतमऋषिः। सोमो देवता। विराट्छँदः। चँद्र प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। चँद्रस्य शृणुनामानि शुभदानि महीपते। यानि श्रुत्वानरो दुःखान्मुच्यते नात्रसँशयः।। सुधाकरश्च सोमश्च ग्लौरब्जः कुमुदप्रियः। लोकप्रियः शुभ्रभानुश्चँद्रमा रोहिणीपतिः।।शशी हिमकरो राजा द्विजराजो निशाकरः। आत्रेय इँदुः शीताँशुरोषधीशः कलानिधिः।।चैवातृको रमाभ्रात्रा क्षिरोदार्णव सँभवः। नक्षत्र नायकः शँभु शिरश्चूडामणिर्विभुः।।तापहर्ता नभोदीपो नामान्येतानियः पठेत्। प्रत्यहँ भक्ति सँयुक्तस्तस्य पीडा विनश्यति।।तद्दिने च पठेद्यस्तु लभेत् सर्वं समिहितम्। ग्रहादीनाँ च सर्वेषाँ भवेच्चँद्रबलँ सदा।।

लिंगाष्टकँ [Lingaastaka]

ब्रह्म मुरारि सुरार्चितलिंगम्।
निर्मल भासित शोभितलिंगम्।
जन्मजदुःख विनाशकलिंगम्।
तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम्।।

देवमुनि प्रवरार्चितलिंगम्।
कामदहन करुणाकरलिंगम्।
रावणदर्प विनाशकलिंगम्।
तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम्।।

सर्वसुगँध सुलेपितलिंगम्।
बुद्धि विवर्धन कारणलिंगम्।
सिद्ध सुरासुर वँदितलिंगम्।
तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम्।।

कनकमाहामणि भूषितलिंगम्।
फणिपतिवेष्टित शोभितलिंगम्।
दक्षसुयज्ञ विनाशनलिंगम्।
तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम्।।

कुँकुम चँदन लेपित लिंगम्।
पँकजहार सुशोभितलिंगम्।
सँचितपाप विनाशनलिंगम्।
तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम्।।

देवगणार्चित सेवितलिंगम्।
भावैर्भक्तिभिरेवचलिंगम्।
दिनकरकोति प्रभाकरलिंगम्।
तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम्।।

अष्टदळोपरि वेष्टितलिंगम्।
सर्वसमुद्भव कारणलिंगम्।
अष्टदरिद्र विनाशनलिंगम्।
तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम्।।

सुरगुरु सुरवर शोभितलिंगम्।
सुरवन पुष्प सदार्चितलिंगम्।
परमपदँ परमात्मकलिंगम्।
तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम्।।

लिंगाष्टकमिदँ पुण्यँ यः पठेत् शिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सहमोदते।।

दुर्गादेवी स्तोत्र [Durgadevi stotra]

नमस्ते शरण्ये शिवेसानुकँपे।
नमस्ते जगद्व्यापिके विश्वरूपे।।
नमस्ते जगद्वँद्य पापारविंदे।
नमस्ते जगत्कारिणि त्राहि दुर्गे।।

वासवी स्तोत्र [Vasavi stotra]

श्री देवीं नवयौवनाँचित तनुँ श्रेयःप्रदां कन्यकाँ।
स्वर्णालँकृतभूषिताँधृतशुकाँ सौंदर्य वारान्निधिं।।
कारुण्यामृतवर्षिणीं नवमणिभ्राजत्किरीटोज्वलाँ।
वैश्यखातकुलोद्भवाँ शृतिनुताँ वँदे सदा वासवीं।।

श्रीराम स्मरणे [Srirama smarane]

श्रीराघवँ दशरथात्मजप्रमेयँ सीतापतिं रघुकुलान्वय रत्नदीपं।
अजानुबाहुँ अरविंददळायताक्षँ रामँ निशाचर विनाशकरँ नमामि।।

श्रीकृष्ण वँदना [Srikrishna vandana]

करारविंदेन पदारविंदँ मुखारविंदे विनिवेशयँतँ।
वटस्य पत्रस्य पुटे शयानँ बाल मुकुँदँ मनसा स्मरामि।।
वसुदेवसुतँ देवँ कँसदाणूर मर्धनँ।
देवकीपरमानँदँ कृष्णँ वँदे जगद्गुरुँ।।

तुळसी स्तुति [Tulasi Stuti]

नमः तुळसि कल्याणि नमो विष्णुप्रिये शुभे।
नमो मोक्षप्रदे देवि नमः सपत्प्रदायि।।

बुधपँचविंशति नामस्तोत्र [Budhapanchavimshati naama stotra]

अस्य श्री बुधपँचविंशति नामस्तोत्रस्य प्रजापति ऋषिः त्रिष्टुप्छँदः बुधोदेवता बुधप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः। बुधो बुद्धिमताँ श्रेष्टो बुद्धिदाता धनप्रदः। प्रियँगुकलिकाश्यामः कँजनेत्रो मनोहरः। ग्रहोपमो रौहिणेयो नक्षत्रेशो दयाकरः।। विरुद्ध कार्यहँता च सौम्यो बुद्ध विवर्धनः। चंद्रात्मजो विष्णुरूपी ज्ञानी ज्ञो ज्ञानिनायकः। ग्रहपीडाहरो दार पुत्रधान्य पशुप्रदः। लोकप्रियः सौम्य मूर्तिर्गुणदो गुणिवत्सलः। पँचविंशति नामानि बुधस्यैतानि यः पठेत्। स्मृत्वा बुधँ सदा तस्यः

ग्रहपीड सर्वा विनश्यति। तद्दिने वा पठेद्यस्तु लभते स मनोगतम्।।

श्री राघवेंद्र प्रार्थना [Sri Raaghaendra prarthana]

पूज्याय राघवेंद्राय सत्यधर्मरताय च।
भजताँ कल्पवृक्षाय नमताँ कामधेनुवे।।

अश्वत्थ वृक्ष वँदन [Ashwattha vriksha vandana]

मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णुरूपिणे।
अग्रतः शिवरूपाय वृक्षराजाय ते नमः।।

सालिग्राम स्तोत्र [Saaligraama stotra]

सालिग्राम शिलावारि पापहारी विशेषतः।
आजन्म कृत पापानाँ प्रायश्चित्तँ दिने दिने।।

गुरु स्तोत्र [Guru stotra]

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

श्री शारदा स्तोत्र [Sri Sharadaa stotra]

सरस्वती नमस्तुभ्यँ वरदे कामरूपिणि।
विद्यारँभँ करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा।।
नमस्ते शारदादेवि काश्मीरपुरवासिनि।
त्वामहँ प्रार्थये नित्यँ विद्यादानँ च देहिमे।।

श्री महालक्श्म्यष्टक स्तोत्र [Sri Mahalakshmyastaka stotra]

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते।
शँख़चक्र गदाहस्ते महालक्श्मीनऽमोस्तुते।।
नमस्ते गरुडारूढे कोलासुर भयँकरि।
सर्वपापहरे देवि महालक्श्मीनऽमोस्तुते।।
सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्ट भयँकरि।
सर्वदुःखहरे देवि महालक्श्मीनऽमोस्तुते।।
सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्ति प्रदायिनि।
मँत्रमूर्ते महादेवि महालक्श्मीनऽमोस्तुते।।
आद्यँतरहिते देवि आद्य शक्ति महेश्वरि।
योगज्ञे योगसंभूते महालक्श्मीनऽमोस्तुते।।

स्थूलसूक्ष्म महारौद्रए महाशक्ति महोदरे।
महापापहरे देवि महालक्ष्मीनऽमोस्तुते।।
पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्म स्वरूपिणि।
परमेशि जगन्मातः महालक्ष्मीनऽमोस्तुते।।
श्वेताँबरधरे देवि नानालँकारभूषिते।
जगत्स्थिते जगन्मातः महालक्ष्मीनऽमोस्तुते।।
महालक्ष्म्यष्टक स्तोत्रं यः पठेत्भक्तिमान्नरः।
सर्वसिद्धिममाप्नोति राज्यँ प्राप्नोति सर्वद।।
एककाले पठेन्नित्यँ महापाप विनाशँ।
द्विकाले यः पठेन्नित्यँ धनधान्य सम्न्वितः।।
त्रिकाले यः पठेन्नित्यँ महाशत्रु विनाशनँ।
महालक्ष्मीभवेन्नित्यँ प्रसन्ना वरदा शुभा।।

श्री वेंकटेश स्तोत्र [Sri Veenkatesha stotra]
कल्याणाद्भुत गात्राय कामितार्थ प्रदायिने।
श्रीमद्वेंकटनाथाय श्रीनिवासाय ते नमः।।

श्रीरामाष्टक [Sriraamaashtaka]
भजे विशेष सुँदरँ समस्त पापखंडनम्।
स्वभक्त चित्तरंजनं सदैव राममद्वयम्।।
जटाकलापशोभितँ समस्त पापनाशकम्।
स्वभक्तभीतिभँजनँ भजेह राममद्वयम्।।
निजस्वरूप बोधकँ कृपाकरँ भवापहम्।
समँशिवँ निरँजनम् भजेह राममद्वयम्।।
सहप्रपँचकल्पितँ ह्यनामरूप वास्तवम्।
निराकृतिं निरामयँ भजेह राममद्वयम्।।
निष्प्रपँच निर्विकल्प निर्मलँ निरामयम्।
चिदेकरूप सँततँ भजेह राममद्वयम्।।
भवाब्धिपोतरूपकं ह्यशेषदेहकल्पितम्।
गुणाकरँ कृपाकरँ भजेह राममद्वयम्।।
महावाक्यबोधकैर्विराज मानवाक्पदैः।
परब्रह्मव्यापकँ भजेह राममद्वयम्।।
शिवप्रदँ सुखप्रदँ भवच्छिदँ भ्रमापहम्।
विराजमानदैशिकम् भजेह राममद्वयम्।।
रामाष्टकँ पठति यः सुकरँ सुपुण्यँ व्यासेन भाषितमिदँ।

शृणुते मनुष्यः श्रिविद्याँ श्रियँविपुलसौख्यमनँतकीर्तिं।
सँप्राप्यँ देहविलये लभते च मोक्षम्।।

नवग्रह स्तोत्र [Navagraha stotra]

जपाकुसुमसँकाशँ काश्यपेयं महाद्युतिं।
तमोरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोस्मि दिवाकरँ।।
दधिशँख तुषाराभँ क्षीरोदार्णव सँभवँ।
नमामि शशिनँ सोमँ शंभोर्मुकुट भूषणँ।।
धरणीगर्भसँभूतँ विद्युत्काँति समप्रभं।
कुमारं शक्तिहस्तँ तँ मँगलँ प्रणमाम्यहँ।।
प्रियँगु कलिकाश्यामँ रूपेणा प्रतिमँ बुधँ।
सौम्यँ सौम्यगुणोपेतँ तँ बुधँ प्रणमाम्यहँ।।
देवानां च ऋषिणां च गुरुं काचन सन्निभँ।
बुद्धिभूतँ त्रिलोकेशँ तँ नमामि बृहस्पतिं।।
हिमकुँद मृणालाभँ दैत्यानाँ परमँ गुरुँ।
सर्वशास्त्र प्रवक्तारँ भार्गवँ प्रणमाम्यहँ।।
नीलाँजन समाभासँ रविपुत्रं यमाग्रजँ।
छाया मार्तांड सँभूतँ तँ नमामि शनैश्चरँ।।
अर्धकायँ महावीर्यं चँद्रादित्य विमर्दनँ।
सिंहिकागर्भ सँभूतँ तँ राहुँ प्रणमाम्यहँ।।
फलाश पुष्पसँकाशँ तारकाग्रहमस्तकँ।
रौद्रँ रौद्रात्मकँ घोरँ तँ केतुँ प्रणमाम्यहँ।।
इति व्यासमुखोद्‌गीतँ यः पठेत्सुसमाहितः।
दिवावा य दिवा रात्रौ विघ्नशांतिर्भविश्यति।।
नरनारी नृपाणाँच भवेद्दुःस्वप्न नाशनँ।
ऐश्वर्यमतुलँ तेषामारोग्यँ पुष्टिवर्धनँ।।
ग्रहनक्षत्रजाः पीडास्तस्कराग्नि समुद्‌भवाः।
ताः सर्वाः प्रशमनँ याँति व्यासोब्रूतेन सँशयः।।

सूर्य ध्यान [Suurya dhyaana]

उदये ब्रह्मस्वरूपोऽयँ मध्याह्नेतु महेश्वरः।
अस्तमाने स्वयँ विष्णुः त्रियिमूर्ति दिवाकरः।।

सूर्य द्वादशनामावळि [Suurya dwaadashanaamaavali]

ओं मित्राय नमः। ओं रवये नमः।ओं सूर्याय नमः। ओं भानवे नमः।ओं खगाय नमः। ओं पूष्णे

नमः। ओं हिरण्यगर्भाय नमः। ओं मरीचये नमः। ओं आदित्याय नमः। ओं सवित्रे नमः। ओं अर्काय नमः। ओं भास्कराय नमः। ओं श्री सवितृसूर्यनारायणाय नमः।।

शिव स्तोत्र [Shiva stotra]

ज्योतिर्मात्र स्वरूपाय निर्मलज्ञान चक्षुषे।
नमः शिवाय शाँताय ब्रह्मणे लिंगमूर्तये।।

गायत्री मँत्र [Gayatrii mantra]

ओं भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यँ भर्गोदेवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।।

श्री अष्टलक्ष्मि स्तोत्र [Sri astalakshmi stotra]

सुमनसवँदित सुँदरि माधवि चँद्रसहोदरि हेममये।
मुनिगण मँडित मोक्षप्रदायिनि मँजुळ भाषिणि वेदनुते।।
पँकज वासिनि देवसुपूजित सद्गुणवर्शिणि शाँतियुते।
जय जय हे मधुसूदनकामिनि आदिलक्ष्मी सदा पालयमाँ।।
अयिकलिकल्मषनाशिनि कामिनि वैदिकरूपिणि वेदमये।
क्षीर समुद्भव मँगळरूपिणि मँत्र निवासिनि मँत्रनुते।।
मँगळदायिनि अँबुजवासिनि देवगणाश्रित पादयुते।
जय जय हे मधुसूदनकामिनि धान्यलक्ष्मी सदा पालयमाँ।।
जयवरवर्णिनि वैष्णवि भार्गवि मंत्र स्वरूपिणि मँत्रमये।
सुरगण पूजित शीघ्रफलप्रद ज्ञानविकासिनि शास्त्रनुते।।
भवभयहारिणि पाप विमोचनि साधु जनाश्रित पादयुते
जय जय हे मधुसूदनकामिनि धैर्यलक्ष्मी सदा पालयमाँ।।
जयजय दुर्गति नाशिनि कामिनि सर्वफलप्रद शास्त्रमये।
रथगजसुरगपदाति समावृत परिजन मँडित लोकसुते।।
हरिहर ब्रह्मसुपूजित सेवित तापनिवारिणि पादयुते।
जय जय हे मधुसूदनकामिनि गजलक्ष्मीरूपेण सदा पालयमाँ।।
अयिखगवाहिनि मोहिनि चक्रिणि रागविवर्धिनि ज्ञानमये।
गुणगण वारिधि लोकहितैषिणि स्वरसप्त भूषित गाननुते।।
सकल सुरासुरु देव मुनीश्वर मानव वँदित पादयुते।
जय जय हे मधुसूदनकामिनि सँतानलक्ष्मी सदा पालयमाँ।।
जयजय कमलासनि सद्गुणदायिनि ज्ञान विकासिनि ज्ञानमये।
अनुदिनमर्चित कुँकुमधूसर भूषित वासित वाद्यनुते।।
कनकधारास्तुति वैभव वँदित शँकर देशिक मान्यपदे।

जय जय हे मधुसूदनकामिनि विजयलक्ष्मी सदा पालयमाँ।।
प्रणत सुरेश्वरि भारति भार्गवि शोकविनाशिनि रत्नमये।
मणिमय भूषित कर्णविभूषण शाँति समावृत हास्यमुखे।।
नवनिधि दायिनि कलिमलहारिणि कामित फलप्रद हस्तयुते।
जय जय हे मधुसूदनकामिनि विद्यालक्ष्मी सदा पालयमाँ।।
धिमि धिमि धिंदिमि धिंदिमि धिंदिमि दुँदुभि नाद सँपूर्णमये।
घम घम घुंघुम घुंघुम घुंघुम शँखनिनाद सुवाद्यनुते।।
वेद पुराणेतिहास सुपूजित वैदिकमार्ग प्रदर्शयुते।
जय जय हे मधुसूदनकामिनि धनलक्ष्मीरूपेण सदा पालयमाँ।।

अष्टादश पीठ शक्तिदेवता स्तोत्र [Astaadasha peetha shaktideevataa stotra]

लँकायाँ शाँकरी देवी कामाक्षीकाँचिपुरे।
पर्जन्ये सिंहलादेवी चामुँडी क्रौंचद्वीपके।।
अहिक्षेत्रे कामरूपी पैठणे पीठिकापुरी।
वङ्याणे गिरिजादेवि माणिक्या चित्रकूटके।।
माहुर्यामेकवीरा च प्रयागे माधवी तथा।
जालँधरे विष्णुदेवीकाश्याँ मँगळागौरिका।।
कुरुक्षेत्रे महामाया उज्जयिन्याँतु कालिका।
सँनत्याँ चँदालादेवी दरवीरे तु लक्ष्मिका।।
अलपुर्यां जोगुळाँबा श्रीशैलेभ्रमराँबिका।
इत्यष्टादश पीठेषु शक्तयश्च मुनिश्रुतेः।।
श्रवणात्पठनात्पापँ सर्वोपद्रवनाशम्।
सर्वसौभाग्यदँ नृणाँ सर्वकाम फलप्रदम्।।
अष्टादश महापीठ ऋषिभिर्निर्मिता पुरा।
त्रिसँध्यँ यः पठेन्नीत्यँ सर्व कामार्थ सिद्धिदम्।।

श्री वेंकटेश स्तोत्र [Sri Veenkateesha stotra]

कमलाकुचचूचुककुँकुमतो नियतारुणितातुलनीलतनो।
कमलायतलोचन लोकपते विजयिभव वेंकटशैलपते।।
स चतुर्मुखषण्मुख पँचमुख प्रमुखाखिल दैवतमौळिमणे।
शरणागतवत्सल शौर्यनिधे परिपालय माँ वृषशैलपते।।
अतिवेलतया तव दुर्विषहैरनुवेलकृतैरपराधशतैः।
भरितँ त्वरितँ वृषशैलपते परया कृपया परिपाहि हरे।।
अधि वेंकटशैल मुदारमतेर्जनताभिमताधिकदानरतात्।
परदेवतया गदितान्निगमैः कमलादयितान्न परँ कलये।।

कल वेणुरवावशगोपवधूशतकोटिवृतात् स्मरकोटिसमात्।
प्रतिवल्लविकाभिमतात् सुखदात् वसुदेवसुतान्न परँ कलये।।
अभिराम गुणाकर दाशरथे जगदेक धनुर्धर धीरमते।
रघुनायक राम रमेश विभो वरदो भव देव दयाजलधे।।
अवनीतनया कमनीयकरं रजनीकरचारुमुखाँबुरुहम्।
रजनीचर राज तमो मिहिरँ महनीय महँ रघुराममये।।
सुमुखं सुहृदँ सुलभँ सुखदँ स्वनुजँ च सुकायममोघशरम्।
अपहाय रघूद्वहमन्यमहँ न कथँचन कँचन जातु भजे।।
विना वेंकटेशँ न नाथो न नाथः सदा वेंकटेशँ स्मरामि स्मरामि।
हरे वेंकटेश प्रसीद प्रसीद प्रियँ वेंकटेशँ प्रयच्छ प्रयच्छ।।
अहँ दूरतस्ते पदाँभोजयुग्म प्रणमेच्छयाऽगत्य सेवाँ करोमि।
सकृत्सेवया नित्यसेवाफलँ त्वं प्रयच्छ प्रयच्छ प्रभो वेंकटेश।।
अज्ञानिना मया दोषानशेषान् विहितान् हरे।
क्षमस्व त्वँ क्षमस्व त्वँ शेषशैल शिखामणे।।

कुबेर अष्टोत्तर शतनामावळि [Kubeera asttoottara shatanaamaavali]

ओं कुबेराय नमः। ओं धनदाय नमः। ओं श्रीमते नमः।ओं यक्षेशाय नमः। ओं कुह्यकेश्वराय नमः। ओं निधीशाय नमः। ओं शँकर सखाय नमः। ओं महालक्ष्मीनिवास भुवये नमः। ओं महापद्म निधीशाय नमः। ओं पूर्णाय नमः। ओं पद्मदीश्वनिराय नमः। ओं शंखाख्य निधिनाथाय नमः। ओं मकराख्य निधिप्रियाय नमः। ओं सुखि सँस्व निधिनायकाय नमः। ओं मुकुँद निधिनायकाय नमः। ओं कुँदाक्य निधिनाथाय नमः। ओं नीलनित्याधिपाय नमः। ओं महते नमः। ओं वरनित्याधिपाय नमः। ओं पूज्याय नमः। ओं लक्ष्मीसाम्राज्यदायकाय नमः। ओं इलपिलापतये नमः। ओं कोशाधीशाय नमः। ओं कुलोचिताय नमः। ओं अश्वरूपाय नमः। ओं विश्ववँद्याय नमः। ओं विशेषज्ञानाय नमः। ओं विशारदाय नमः। ओं नळकूबरनाथाय नमः। ओं मणिग्रीवपित्रे नमः। ओं गूढमँत्राय नमः। ओं वैश्रवणाय नमः। ओं चित्रलेखा प्रियाय नमः। ओं एकपिंकाय नमः। ओं अलकधीशाय नमः। ओं पौलस्त्याय नमः। ओं नरवाहनाय नमः। ओं कैलासशैलनिलयाय नमः। ओं राज्यदाय नमः। ओं रावणाग्रजाय नमः। ओं चित्र चैत्ररथाय नमः। ओं उद्यान विहाराय नमः। ओं विहार सुकुतूहलाय नमः। ओं महोत्सहाय नमः। ओं महाप्राज्ञाय नमः। ओं सार्वभौमाय नमः। ओं अँगनाथाय नमः। ओं सोमाय नमः। ओं सौम्यदिगीश्वराय नमः। ओं पुण्यात्मने नमः। ओं पुरूहतश्रीयै नमः। ओं सर्व पुण्य जनेश्वराय नमः। ओं नित्यकीर्तये नमः। ओं लँकाहात्तन नायकाय नमः। ओं यक्षाय नमः। ओं परमशाँतात्मने नमः। ओं यक्षराजे नमः। ओं यक्षिणीवृताय नमः। ओं किन्नरेश्वराय नमः। ओं किंपुरुषनाथाय नमः। ओं खड्गयुताय नमः। ओं वशिने नमः। ओं ईशानदक्षपार्श्वस्थाय नमः। ओं वायुनाम समाश्रयाय नमः। ओं धर्ममार्गैक निराशाय नमः। ओं धर्मसँमुख सँस्थिताय नमः। ओं नित्येश्वराय नमः। ओं धनाध्यक्षाय नमः। ओं अष्टलक्ष्म्याश्रितालयाय नमः। ओं मनुष्य

धर्मण्ये नमः। ओं सकृत्ताय नमः। ओं कोशलक्ष्मीसमाश्रिताय नमः। ओं धनलक्ष्मी नित्यवासाय नमः। ओं धान्यलक्ष्मी नित्यवासाय नमः। ओं अश्वलक्ष्मी सदावासाय नमः। ओं गजलक्ष्मीस्थिरालयाय नमः। ओं राज्यलक्ष्मी जन्मगेहाय नमः। ओं धैर्यलक्ष्मी कृपाश्रयाय नमः। ओं अंखडैश्वर्य सँयुक्ताय नमः। ओं नित्यानँदाय नमः। ओं सुखाश्रयाय नमः। ओं नित्य तृप्ताय नमः। ओं निधित्तारै नमः। ओं निराशाय नमः। ओं निरुपद्रवाय नमः। ओं नित्यकामाय नमः। ओं निराकांक्षाय नमः। ओं निरुपाधिकवासभुवये नमः। ओं शांताय नमः। ओं सर्वगुणोपेताय नमः। ओं सर्वज्ञाय नमः। ओं सर्वसँहिताय नमः। ओं शर्वाणी करुणापात्राय नमः। ओं शतानत कृपालयाय नमः। ओं गँधर्वकुल सँसेव्याय नमः। ओं सौगँधिका कुसुमप्रियाय नमः। ओं सुवर्णनगरीवासाय नमः। ओं निधिपीठ समाश्रिताय नमः। ओं महामेरुत्तरस्तायै नमः। ओं महर्षिगणसँस्तुताय नमः। ओं शूर्पणका ज्येष्ठाय नमः। ओं शिवपूजारताय नमः। ओं अनघाय नमः। ओं राजयोग समायुक्ताय नमः। ओं राजशेखरपुज्याय नमः। ओं कुबेराय नमः।।

श्री राम रक्षा स्तोत्र [Sri Raama rakshaa stotra]

चरितँ रघुनाथस्य शतकोटि प्रविस्तरम्।
एकैक मक्षरँ पुँसाँ महापातक नाशनम्।।
ध्यात्वा नीलोत्वल श्याम रामँ राजीवलोचनम्।
जानकी लक्ष्मणोपेतँ जटामकुट मँडितम्।।
साऽसितूण धनुर्बाण पाणिं नक्तँ चराँतकम्।
स्वलीलया जगत्त्रातु मूविर्भूत मजँ विभुम्।।
रामरक्षां पठेत् प्राज्ञः पापघ्निं सर्वकामदाम्।
शिरो मे राघवः पातु फालँ दशरथात्मजः।।
कौसल्येयॊ दृशौपातु विश्वामित्रः प्रियः श्रुति।
घ्राणँ पातु मुखत्राता मुखँ सौमित्रि वत्सलः।।
जिह्वाँ विद्या निधिः पातु कँठँ भरत वँदितः।
स्कँधौ दिव्यायुधः पातु भुजौ भग्नेश कार्मुकः।।
करौ सीतापतिः पातु ह्रदयँ जामदग्न्यजित्।
मध्यँ पातु खरध्वँसी नाभिं जाँबवदाश्रयः।।
सुग्रीवेशः कटी पातु सक्थिनी हनुमत्प्रभुः।
ऊरू रघूत्तमः पातु रक्षः कुल विनाशकृत्।।
जानुनी सेतुकृत्पातु जँघे दशमुखाँतकः।
पादौ विभीषण श्रिदः पातु रामोऽखिलँ वपुः।।
एताँ रामबलोपेताँ रक्षाँ यः सुकृती पठेत्।
स चिरायुः सुखी पुत्री विजया विनया भवेत्।।
पाताळ भूतल व्योम चारिण श्छद्मचारिणः।
स द्रष्टु मपि सक्तास्ते रक्षितम् रामनामभिः।।

रामेति रामभद्रेति रामचँद्रेति वा स्मरन्।
नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विंदति।।
जगज्जैत्रैक मँत्रेण रामनाम्नाऽ भिरक्षितम्।
यः कँठे धारयेत्तस्य करस्थाः सर्व सिद्धयः
वज्रपँजर नामेदँ यो रामकवचँ सँरेत्।
अव्याहताज्ञः सर्वत्र लभते जयमँगळँ।।
आदिष्टवान् यथा स्वप्ने रामरक्षा मिमाँ हरः।
तथा लिखितवान् प्रातः प्रबुद्दो बुधकौशिकः।।
आरामः कल्पवृक्षाणाँ विरामः सकलापदाम्।
अभिरामस्त्रिलोकानाम् रामः श्री मान्सनः प्रभुः।।
तरुणौ रूपसँपन्नौ सुकुमारौ महाबलौ।
पुँडरीक विशालाक्षौ चीरकृष्णाजिनाँबरौ।।
फलमूलाशिनौ दाँतौ तापसा ब्रह्मचारिणौ।
पुत्रौ दशरथ स्त्येतौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ।।
शरण्यौ सर्वसत्वानाँ श्रेष्ठा सर्वधनुष्मताम्।
रक्षःकुल निहँतारौ त्रायेताँ नो रघोत्तमौ।।
आत्तसज्यधनुषाविषुस्पृशावक्षयाशुग निषँगसँगिनौ।
रक्षणाय मम रामलक्ष्मणावग्रतः पथि सदैव गच्छताम्।।
सन्नद्धः कवची खड्गी बापबाणधरो युवा।
गच्छन् मनोरथान्नश्च रामः पातु स लक्ष्मणः।।
रामो दाशरथिश्शूरो लक्ष्मणानुचरो बली।
काकुत्स्थस पुरुषः पूर्णः कौशल्येयो रघूत्तमः।।
वेदाँतवेद्यो यज्ञेशः पुराण पुरुषोत्तमः।
जानकीवल्लभ श्रीमानप्रमेय पराक्रमः।।
इत्येतानि जपेन्नित्यँ मद्भक्तः श्रद्धयान्वितः।
अश्वमेधाधिकँ पुण्यं सँप्राप्नोति न सँशयः।।
रामँ दूर्वादळश्यामँ पद्माक्षँ पीतावासनम्।
स्तुवँति नामभिर्धिवत्यैर्नते सँसारिणो नराः।।
रामँ लक्ष्मणपूर्वजँ रघुवरँ सीतापतिं सुँदरम्।
काकुत्स्थँ करुणार्ण्वं गुणनिधिं विप्रप्रियँ धार्मिकम्।।
राजेंद्र सत्यसँधँ दशरथतनयँ श्यामलम् शाँतमूर्तिम्।
वँदे लोकाभिरामँ रघुकुलतिलकँ राघवं रावणारिम्।।
रामाय रामभद्राय रामचँद्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः।।
श्री राम राम रघुनँदन रामराम।

श्री राम राम भरताग्रज रामराम।।
श्री राम राम रणकर्कश रामराम।
श्री राम राम शरणँ भव रामराम।।
श्री रामचँद्र चरणौ मनसा स्मरामि।
श्री रामचँद्र चरणौ वचसा गृणामि।।
श्री रामचँद्र चरणौ शिरसा नमामि।
श्री रामचँद्र चरणौ शरणँ प्रपद्ये।।
माता रामो वत्पिता रामचँद्रः।
स्वामी रामो मत्सखा रामचँद्रः।।
सर्वस्वँ मे रामचँद्रो दयाळुः।
न्नान्यं जाने नैव जाने न जाने।।
दक्षिणे लक्ष्मणो वामे च जनकात्मजा।
पुरतो मारुतिर्यस्य तँ वँदे रघुनँदनम्।।
लोकाभिरामँ रणरँगधीरँ।
राजीवनेत्रँ रघुवँशनाथम्।।
कारुण्यरूपँ करुणाकरँ तँ।
श्रीरामचँद्रँ शरणँ प्रपद्ये।।
मनोजवँ मारुततुल्य वेगम्।
जितेंद्रियँ बुद्धिमताँ वरिष्टँ।।
वातात्मजँ वानर यूथमुख्यं।
श्रीरामदूतँ शरणँ प्रपद्ये।।
कूजँतँ राम रामेति मधुरँ मधुराक्षरम्।
आरुह्य कविताशाखाँ वँदे वाल्मीकि कोकिलँ।।
आपदा मपहर्तारँ दातारँ सर्वसँपदाम्।
लोकाभिरामँ श्रीरामँ भूयो भूयो नमाम्यहम्।।
भर्जनँ भवबीजाना मर्जनँ सुखसँपदाम्।
तर्जनँ यमदूतानाँ रामरामेति गर्जनम्।।
रामो राजमणिस्सदा विजयते रामँ रमेशँ भजे।
रामेणाऽभिहता निशाचर चमू रामाय तस्मै नमः।।
रामान्नाऽस्ति परायणँ परतरँ रामस्य दासोऽस्म्यहँ।
रामे चित्तलय स्सदा भवतुमे भो राम मामुद्धर।।
श्रीराम राम रामेति रमे रमे रामे मनोरमे।
सहस्त्रनाम तत्तुल्यँ रामनाम वरानने।।

श्री हनुमद्ष्टोत्तर शतनामावळि

SHRI HANUMADASHTTOTTARA SHATANAAMAAVALI

१. ओं आंजनेयाय नमः

२. ओं महावीराय नमः

३. ओं हनुमते नमः

४. ओं मारुतात्मजाय नमः

५. ओं तत्वज्ञानप्रदाय नमः

६. ओं सीतादेवी मुद्राप्रदायकाय नमः

७. ओं अशोकवनिकाच्छेत्रे नमः

८. ओं सर्वमाया विभँजनाय नमः

९. ओं सर्वबँध विमोक्त्रे नमः

१०. ओं रक्षोविध्वँसकारकाय नमः

११. ओं परविद्या परीहाराय नमः

१२. ओं परशौर्यविनाशनाय नमः

१३. ओं परमँत्रनिराकर्त्रे नमः

१४. ओं परयँत्र प्रभेदकाय नमः

१५. ओं सर्वग्रहविनाशिने नमः

१६. ओं भीमसेनसहायकृते नमः

१७. ओं सर्वदुःखहराय नमः

१८. ओं सर्वलोकाचारिणे नमः

१९. ओं मनोजवाय नमः

२०. ओं पारिजात ध्रुमूलस्थाय नमः

२१. ओं सर्वमँत्र स्वरूपवते नमः

२२. ओं सर्वतँत्र स्वरूपिणे नमः

२३. ओं सर्वयँत्रात्मकाय नमः

२४. ओं कपीश्वराय नमः

२५. ओं महाकायाय नमः

२६. ओं सर्वरोगहराय नमः

२७. ओं प्रभवे नमः

२८. ओं बलसिद्धिकराय नमः

२९. ओं सर्वविद्यासँपत्प्रदायकाय नमः

३०. ओं कपिसेनानायकाय नमः

३१. ओं भविष्यच्चतुराननाय नमः

३२. ओं कुमारब्रह्मचारिणे नमः

३३. ओं रत्नकुँडलदीप्तिमते नमः

३४. ओं सँचलद्वाल सन्नद्धलँबमान शिखोज्वालाय नमः

३५. ओं गँधर्वविद्यातत्वज्ञाय नमः

३६. ओं महाबलपराक्रमाय नमः

३७. ओं कारागृहविमोक्त्रे नमः

३८. ओं शृँखलाबँधमोचकाय नमः

३९. ओं सागरोत्तारकाय नमः

४०. ओं प्राज्ञाय नमः

४१. ओं रामदूताय नमः

४२. ओं प्रतापवते नमः

४३. ओं वानराय नमः

४४. ओं केसरिसुताय नमः

४५. ओं सीताशोक निवारणाय नमः

४६. ओं अँजनागर्भसँभूताय नमः

४७. ओं बालार्कसद्वशाननाय नमः

४८. ओं विभीषणप्रियकराय नमः

४९. ओं दशग्रीवकुलाँतकाय नमः

५०. ओं लक्ष्मणप्राणदात्रे नमः

५१. ओं वज्राकायाय नमः

५२. ओं महाद्युतये नमः

५३. ओं चिरँजीविने नमः

५४. ओं रामभक्ताय नमः

५५. ओं दैत्यकार्यविघातकाय नमः

५६. ओं अक्षहंत्रे नमः

५७. ओं काँचानाभाय नमः

५८. ओं पँचवक्त्राय नमः

५९. ओं महातपसे नमः

६०. ओं लँकिणीभँजनाय नमः

६१. ओं श्रीमते नमः

६२. ओं सिंहिकाप्राणभँजनाय नमः

६३. ओं गँधमादनशैलस्थाय नमः

६४. ओं लँकापुरविदाहकाय नमः

६५. ओं सुग्रीवसचिवाय नमः

६६. ओं धीराय नमः

६७. ओं शूराय नमः

६८. ओं दैत्यकुलाँतकाय नमः

६९. ओं सुरार्चिताय नमः

७०. ओं महातेजसे नमः

७१. ओं रामचूडामणिप्रदायकाय नमः

७२. ओं कामरूपिणे नमः

७३. ओं पिंगळाक्षाय नमः

७४. ओं वर्धिमैनाकपूजिताय नमः

७५. ओं कबळीकृतमार्तांड मँडलायनमः

७६. ओं विजितेंद्रियाय नमः

७७. ओं रामसुग्रीवसँधात्रे नमः

७८. ओं महारावणमर्धनाय नमः

७९. ओं स्फटिकाभाय नमः

८०. ओं वागधीशाय नमः

८१. ओं नवव्याकृतिपँडिताय नमः

८२. ओं चतुर्बाहवे नमः

८३. ओं दीनबँधवे नमः

८४. ओं महात्मने नमः

८५. ओं भक्तवत्सलाय नमः

८६. ओं सँजीवननगाहर्त्रे नमः
८७. ओं शुचये नमः
८८. ओं वाग्मिने नमः
८९. ओं दृढव्रताय नमः
९०. ओं कालनेमिप्रमथनाय नमः
९१. ओं हरिमर्कटमर्कटाय नमः
९२. ओं दाँताय नमः
९३. ओं शाँताय नमः
९४. ओं प्रसन्नात्मने नमः
९५. ओं शतकँठामदापहृते नमः
९६. ओं योगिने नमः
९७. ओं रामकथालोलाय नमः
९८. ओं सीतान्वेषणपँडिताय नमः
९९. ओं वज्रदँष्ट्राय नमः
१००. ओं वज्रनखाय नमः
१०१. ओं रुद्रवीर्य समुद्भवाय नमः
१०२. ओं इँद्रजित्प्रहितामोघ ब्रह्मास्त्रविनिवारकाय नमः
१०३. ओं पार्थध्वजाग्रसँवासिने नमः
१०४. ओं शरपँजरभेदकाय नमः
१०५. ओं दशबाहवे नमः
१०६. ओं लोकपूज्याय नमः
१०७. ओं जाँबवत्प्रीतिवर्धनाय नमः
१०८. ओं सीतासमेत श्रीरामपादसेवा धुरँधराय नमः
इति श्री हनुमदष्टोत्तर शतनामवळि सँपूर्ण

श्रीनामरामायणँ SHRI NAAMA RAAMAYANA

ओं श्रीसीतालक्ष्मण भरतशत्रुघ्न हनुमत्समेत

श्रीरामचँद्रपरब्रह्मणे नमः

बालकाँडँ

१. शुद्धब्रह्म परात्पर राम

२. कालात्मक परमेश्वर राम

३. शेषतल्प सुखनिद्रित राम

४. ब्रह्माद्यमर प्रार्थित राम

५. चँडकिरण कुलमँडन राम

६. श्रीमद्दशरथ नँदन राम

७. कौसल्या सुखवर्धन राम

८. विश्वामित्र प्रियधन राम

९. घोरताटकाघातक राम

१०. मारीचादि निपातक राम

११. कौशिक मखसँरक्षक राम

१२. श्रीमदहल्योद्धारक राम

१३. गौतममुनि सँपूजित राम

१४. सुरमुनिवरगण सँस्तुत राम

१५. नाविकधावित मृदुपद राम

१६. मिथिलापुरजन मोदक राम

१७. विदेहमानसरँजक राम

१८. त्र्यँबक कार्मुक भँजक राम

१९. सीतार्पित वरमालिक राम

२०. कृतवैवाहिक कौतुक राम

२१. भार्गवदर्पविनाशक राम

२२. श्रीमदयोध्यापालक राम

राम राम जय राजा राम; राम राम जय सीता राम

अयोध्याकाँडँ

२३. अगणित गुणगण भूषित राम

२४. आवनीतनया कामित राम

२५. राकाचँद्र समानन राम

२६. पितृवाक्याश्रित कानन राम
२७. प्रियगुहविनिवेदित पद राम
२८.तत्क्षालित निजमृदुपद राम
२९. भरद्वाजमुखानँदक राम
३०. चित्रकूटाद्रि निकेतन राम
३१. दशरथ सँतत चिंतित राम
३२.कैकेयी तनयार्थित राम
३३. विरचित निजपितृकर्मक राम
३४. भरतार्पित निजपादुक राम
राम राम जय राजा राम;   राम राम जय सीता राम

अरण्यकाँडँ

३५. दँडकावनजन पावन राम
३६. दुष्टविराधविनाशन राम
३७. शरभँग सुतीक्ष्णार्चित राम
३८. अगस्त्यानुग्रह वर्धित राम
३९. गृध्राधिपसँसेवित राम
४०. पँचवटीतसुस्थित राम
४१. शूर्पणख़ार्ति विधायक राम
४२. खरदूषणमुख सूदक राम
४३. सीताप्रियहरिणानुग राम
४४. मारीचार्तिकृदाशुग राम
४५. विनष्टसीतान्वेषक राम
४६. गृध्राधिपगतिदायक राम
४७. शबरीदत्त फलाशन राम
४८. कबँधबाहुच्छेदन राम
राम राम जय राजा राम;   राम राम जय सीता राम

किष्किंधाकाँडँ

४९. हनुमत्सेवित निजपद राम
५०. नतसुग्रीवाभीष्टद राम
५१. गर्वित वालिसँहारक राम
५२. वानरदूतप्रेषक राम

५३. हितकर लक्ष्मण सँयुत राम

राम राम जय राजा राम; राम राम जय सीता राम

सुँदरकाँडँ

५४. कपिवरसँतत संस्मृत राम

५५. तद्गतिघ्नध्वँसक राम

५६. सीताप्राणाधारक राम

५७. दुष्टदशाननदूषित राम

५८. शिष्टहनूमद्भूषित राम

५९. सीतावेदित काकावन राम

६०. कृतचूडामणिदर्शन राम

६१. कपिवरवचनाश्वासित राम

राम राम जय राजा राम; राम राम जय सीता राम

युद्धकाँडँ

६२. रावणनिधनप्रस्थित राम

६३. वानरसैन्यसमावृत राम

६४. शोषितसरिदीशार्थित राम

६५. विभीषणाभयदायक राम

६६. पर्वतसेतुनिबँधक राम

६७. कुँभकर्णशिरश्छेदक राम

६८. राक्षससँघ विमर्दक राम

६९. अहिमहिरावणचारण राम

७०. सँहृत दशमुख रावण राम

७१. विधिभवमुखसुरसँस्तुत राम

७२. खस्थितचशरथवीक्षित राम

७३. सीतादर्शन मोदित राम

७४. अभिषिक्तविभीषणनत राम

७५. पुष्पकयानारोहण राम

७६. भरद्वाजादिनिषेवण राम

७७. भरतप्राणप्रियकर राम

७८. साकेतपुरीभूषण राम

७९. सकलस्वीयसमानत राम

८०. रत्नलसत्पीठास्थित राम
८१. पट्टाभिषेकालँकृत राम
८२. पार्थिवकुलसम्मानित राम
८३. विभीषणार्पितरँगक राम
८४. कीशकुलानुग्रहकर राम
८५. सकलजीवसँरक्षक राम
८६. समस्तलोकोधारक राम
राम राम जय राजा राम; राम राम जय सीता राम

उत्तरकाँडँ

८७. आगतमुनिगण सँस्तुत राम
८८. विश्रुतचशकँठोद्भव राम
८९. सीतालिंगन निर्वृत राम
९०. नीतिसुरक्षित जनपद राम
९१. विपिनत्याजित जनकज राम
९२. करित लवणासुरवध राम
९३. स्वर्गत शँबुकसँस्तुत राम
९४. स्वतनय कुशलव नँदित राम
९५. अश्वमेधक्रतु दीक्षित राम
९६. कालावेदित सुरपद राम
९७. अयोध्यकजन मुक्तिद राम
९८. विधिमुख विबुधानँदक राम
९९. तेजोमय निजरूपक राम
१००. सँसृति बँध विमोचक राम
१०२. भक्तिपरायण मुक्तिद राम
१०३. सर्वचराचरपालक राम
१०४. सर्वभवामयवारक राम
१०५. वैकुँठालय सँस्थित राम
१०६. नित्यानँद पदस्थित राम
१०७.राम राम जय राजा राम
१०८. राम राम जय सीता राम

श्री हनुमत् स्तोत्रँ

SHRI HANUMAT STOTRAM

गोष्पदीकृतवाराशिं मशकीकृतराक्षसम्
रामायण महामालारत्नँ वँदे नीलात्मजँ...१
अँजनानँदनँ वीरँ जानकी शोकनाशनम्
कपीशमक्षहँतारँ वँदे लँका भयँकम् ...२
महाव्याकरणाँबोधि मन्तमानसमन्धरम्
कवयन्तँ रामकीर्त्या हनुमन्तमुपास्महे...३
ऊल्लँघ्य सिंधोः सलिलँ सलीलँ; यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः
आदाय तेनैव ददाह लँकाँ; नमामि तँ प्राँजलिराँजनेयँ...४
मनोजवँ मारुततुल्यवेगँ; जितेद्रियँ बुद्धिमताँ वरिष्ठम्
वातात्मजँ वानरयूथ मुख्यँ; श्रीरामदूतँ शिरसा नमामि...५
आँजनेयमतिपाटलाननँ; काँचनाद्रि कमनीय विग्रहम्
पारिजात तरुमूलवासिनँ; भावयामि पवमाननँदम्...६
यत्र यत्र रघुनाथ कीर्तनँ; तत्र तत्र कृतमस्तकाँजलिम्
भाष्पवारिपरिपूर्णलोचनँ; मारुतिं नमत राक्षसाँतकम्...७
बुद्धिर्बलँ यशोधैर्यं; निर्भयत्त्वमारोगता
अजाड्यँ वक्पटुत्वँ च; हनूमत्स्मरणाद्भवेत्...८

श्री गोस्वामि तुळसीदास विरचित

श्री हनुमान् चालीसा SHRI HANUMAN CHAALISA

श्री गुरु चरण सरोज रज निज मनु मुकुर सुधारि
बरनवु रघुवर विमल यश जो दायक फल चारि
बुद्धिहीन तनु जानि के सुमिरौ पवन कुमार
बल बुद्धि विद्या देहु मोहि हरहु कलेश विकार

जय हनुमान् ज्ञान गुणसागर. जय कपीस तिहुलोक वुजागर... १
रामदूत अतुलित बलधामा. अँजनीपुत्र पवनसुत नामा ...२
महावीर विक्रम बजरँगी. कुमति निवारा सुमति के सँगी ...३
कँचन बरन बिराज सुवेसा. कानन कुँडल कुँचित केसा...४
हाथ बज्र औ ध्वजा विराजै. काँधे मूँज जनेवू साजै...५
सँकर सुवन केसरी नंदन. तेज प्रताप महा जगबँदन ...६
विद्यावान गुनी अति चातुर. राम काज करिबे को आतुर ...७
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया. राम लखन सीता मन बसिया...८
राम लक्ष्मण जानकी जै बोलो हनुमान् की

सूक्ष्म रूप धरि सियहि दिखावा. विकट रूप धरि लँक जराबा...९
भीम रूप धरि असुर सँहारे. रामचंद्र के काज सँवारे...१०
लाय सजीवन लखन जियाये. श्री रघुबीर हरषी वुरलाये...११
रघुपति कीन्ही बहुत बडायी. तुम मम प्रिय भरत सम भायी ...१२
सहस बदन तुम्हारो जस गावै. अस कहि श्रीपति कँठ लगावै ...१३
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा. नारद सारद सहित अहीसा...१४
यम कुबेर दिगपाल जहा ते. कपि कोविद कहि सके कहा ते...१५
तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा. राम मिलाय राजपद दीन्हा...१६
राम लक्ष्मण जानकी जै बोलो हनुमान् की

तुम्हारो मँत्र विभीषण माना. लँकेश्वर भये सब जग जाना...१७
युग सहस्त्र योजन पर भानू. लील्यो ताहि मधुर फल जानू...१८
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माही. जलधि लांघि गये अचरज नाही ...१९
दुर्गम काज जगत के जेते. सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते...२०
राम दुआरे तुम रखवारे. होत न अज्ञा बिनु पैसारे...२१

सब सुख लहै तुम्हारि सरना. तुम रक्षक काहू को डरना...२२
आपन तेज सम्हारो आपै. तीनो लोक हाँक ते कापै...२३
भूत पिसाच निकट नहि आवै. महावीर जब नाम सुनावै...२४
राम लक्ष्मण जानकी जै बोलो हनुमान् की

नासै रोग हरै सब पीरा. जपत निरँतर हनुमत वीरा...२५
सँकट से हनुमान् छुडावै. मन क्रम बचन ध्यान जो लावै...२६
सब पर राम तपस्वी राजा. तिन के काज सकल तुम साजा...२७
और् मनोरथ जो कोयि लावै. तासु अमित जीवन फल पावै...२८
चारो युग प्रताप तुम्हारा. है प्रसिद्ध जगत वुजियारा...२९
साधु सँत के तुम रखवारे. असुर निकँदन राम दुलारे...३०
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता. असवर दीन्ह जानकी माता...३१
राम रसायन तुम्हरे पासा.   सदा रहो रघुपति के दासा(२)...३२
राम लक्ष्मण जानकी जै बोलो हनुमान् की

तुम्हरे भजन रामको भावै. जन्म जन्म के दुःख बिसरावै...३३
अँत काल रघुपतिपुर जायी. जहा जन्मि हरि भक्त कहायी...३४
और् देवता चित्त न धरयी.   हनुमत सेयि सर्व सुख करयी...३५
सँकट हरै मिटै सब पीडा.   जो सुमिरै हनुमँत बलवीरा...३६
जै जै जै हनुमान् गोसायी(२).   कृपा करहु गुरु देव की नायी...३७
यह शत बार पाठ कर जोयी.   छुटहि बँदि महा सुख होयी...३८
जो यह पडै हनुमान् चालीसा.   होयि सिद्धि साखी गौरीसा...३९
तुळसीदास सदा हरि चेरा.   कीजै नाथ हृदय मह डेरा...४०
राम लक्ष्मण जानकी जै बोलो हनुमान् की

पवन तनय सँकट हरन मँगल मूरति रूप
राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप
सियावर रामचँद्र की जै पवनसुत हनुमान् की जै

श्रीराम मँगळाशासनँ

SHRIRAAMA MANGALAASHASANAM

कौशलेंद्राय महनीय गुणाब्धये
चक्रवर्ति तनूजाय सार्वभौमाय मँगळँ …1
वेदवेदान्तवेद्याय मेघश्यामलमूर्तये
पुँसाँ मोहनरूपाय पुण्यश्लोकाय मँगळँ …2
विश्वामित्रान्तरँगाय मिथिलानगरिपतेः
भ्याग्यानाँ परिपाकाय भव्यरूपाय मँगळँ …3
पितृभक्ताय सततँ भ्रातृभिः सह सीतया
नँदिताखिललोकाय रामभद्राय मँगळँ …4
त्यक्त साकेत वासाय चित्रकूट विहारिणे
सेव्याय सर्वयमिनाँ धीरोदयाय मँगळँ …5
सौमित्रिणा च जानक्या चापबाणासिधारिणे
सँसेव्यायसदा भक्तया स्वामिने मम मँगळँ …6
दँडकारण्यवासाय खण्डितामरशत्रवे
गृध्रराजाय भक्ताय मुक्तिदायास्तु मँगळँ …7
सादरँ शबरिदत्त फलमूलाभिलाषिणे
सौलभ्यपरिपूर्णाय सत्वोद्रिक्ताय मँगळँ …8
हनुमत्समवेताय हरीशाभीष्टदायिने
वालिप्रमथनयास्तु महाधीराय मँगळँ …9
श्रीमते रघुवीराय सेतुल्लंघितसिन्धवे
जितराक्षसराजाय रणधीराय मँगळँ …10
विभीषण कृतेप्रीत्या लँकाभीष्ट प्रदायिने
सर्वलोक शरण्याय श्रीराघवाय मँगळँ …11
आसाद्य नगरी दिव्यामभिषिक्ताय सीताय
राजाधिराजाय रामचँद्राय मँगळँ …12
ब्रह्मादिदेव सेव्याय ब्रह्मन्याय महात्मने
जानकी प्राणनाथाय रघुनाथाय मँगळँ …13
श्रीसौम्या जामातृ मुने कृपयास्मानु पेयुशे
महते मम नाथाय रघुनाथाय मँगळँ …14
मँगळाशासन परैर्मदाचार्य पुरौगमैः
सर्वैश्च पूर्वाचार्यै सत्कृतायास्तु मँगळँ …15

HARIHI OM